

५. सुनो और गुनो

— गोपालदास सक्सेना 'नीरज'

परिचय

जन्म : १९२४, इटावा (उ.प्र.)

परिचय : गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी हिंदी साहित्यकार, शिक्षक, कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। आपने मर्मस्पर्शी काव्यानुभूति और सहज-सरल भाषा द्वारा हिंदी कविता को एक नया मोड़ दिया है।

प्रमुख कृतियाँ : 'गीत-अगीत', 'नीरज की गीतिकाएँ', 'नीरज की पाती', 'विभावरी', 'कारवाँ गुजर गया', 'तुम्हारे लिए', 'प्राणगीत' (कविता संग्रह) आदि।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत आधुनिक दोहों में कवि नीरज जी ने विविध मूल्यों की बात की है। इनमें आपने लोगों की भलाई करने, प्रेम से रहने, कृतज्ञ बनने, अभिमान को त्यागने आदि के लिए प्रेरित किया है।



गो मैं हूँ मँझधार में आज बिना पतवार,
लेकिन कितनों को किया मैंने सागर पार।

जब हो चारों ही तरफ घोर घना अँधियार,
ऐसे में खद्योत भी पाते हैं सत्कार।

टी. वी. ने हमपर किया यूँ छुप-छुपकर वार,
संस्कृति सब घायल हुई बिना तीर-तलवार।

दूरभाष का देश में जब से हुआ प्रचार,
तब से घर आते नहीं चिट्ठी-पत्री-तार।

ज्ञानी हो फिर भी न कर दुर्जन संग निवास,
सर्प-सर्प है, भले ही मणि हो उसके पास।

भक्तों में कोई नहीं बड़ा सूर से नाम,
उसने आँखों के बिना देख लिए घनश्याम।

तोड़ो, मसलो या कि तुम उसपर डालो धूल,
बदले में लेकिन तुम्हें खुशबू ही दे फूल।

पूजा के सम पूज्य है जो भी हो व्यवसाय,
उसमें ऐसे रमो ज्यों जल में दूध समाय।

हम कितना जीवित रहे इसका नहीं महत्त्व,
हम कैसे जीवित रहे यही तत्त्व अमरत्व।

जीने को हमको मिले यद्यपि दिन दो-चार,
जिएँ मगर हम इस तरह हर दिन बनें हजार।

अहंकार और प्रेम का, कभी न निभता साथ,
जैसे संग रहते नहीं संध्या और प्रभात।

मात्र वंदना में नहीं फूल चढ़े दो-चार,
उसके चरणों में सदा चढ़ते शीश अपार।

दिए तुझे माँगें बिना जिसने फल और छाँह,
काट रहा है मूढ़ तू, उसी वृक्ष की बाँह।

शब्द वाटिका

मँझधार = नदी की धारा के बीच

पतवार = नाव को आगे-पीछे चलाने का साधन, चप्पू

खद्योत = जुगनू

प्रभात = सुबह

शीश = सिर

छाँह = छाया

* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) परिणाम लिखो :

१. दूरदर्शन के आने का -----

२. दूरभाष के प्रचार का -----

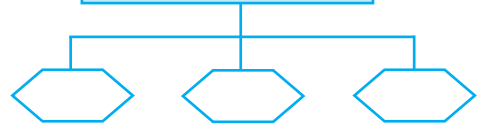
(२) प्रस्तुत कविता में से अपनी पसंद के किन्हीं दो दोहों से मिलने वाली सीख लिखो ।

(३) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
१. सर्प	-----	छाँह
२. घनश्याम	-----	मणि
३. फूल	-----	सूरदास
४. वृक्ष	-----	खुशबू

(४)

फूल तब भी सुगंध देते हैं



कल्पना पल्लवन

‘चरित्र निर्माण में सत्संगति आवश्यक होती है’ इसपर अपने विचार लिखो ।

भाषा बिंदु

निम्नलिखित विरामचिह्नों का प्रयोग करके कोई संवाद लिखो :

; , | ? ! ‘.....’ “.....”

उपयोजित लेखन

अपने विद्यालय में मनाए गए ‘बाल दिवस’ समारोह का वृत्तांत लिखो ।

मैंने समझा



स्वयं अध्ययन

मनुष्य के लिए वृक्षों से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की सूची बनाओ ।

